॥ ॐ सिद्धाय नमः ॥

वेद स्वयंसिद्ध विद्या - ऋचा

(स्वामी हरदास जीवन पद्धति)

वैदिक संशोधन मंडल, पुणे (आदर्श संस्कृत शोध संस्थान) के सौजन्य से

यहाँ दी गई ऋचाएँ अभ्यासात्मक, संशोधन प्रयोग के लिए संकलित की है। इनका भावार्थ सर्वसामान्यों के लिए दिया गया है।

आरोग्य प्राप्ति हेतु

४ नवम्बर २०१७

ऋग्वेद ३ / मण्डल ७ / सुक्त ५९ / ऋचा (१२)
देवता - रूद्र (मृत्युविमोचनी) / ऋषि - वसिष्ठ मैत्रावरूणि

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥१२॥

हम सुरभित पुण्य कीर्ति एवं पुष्टीवर्धक (पोषण साधनों को बढ़ाने वाले) तथा तीन प्रकार से संरक्षण देने वाले (त्र्यंबक) भगवान की उपासना करते हैं। वे रूद्रदेव हमें उर्वारूक फल (ककडी-खरबूजा आदि) की तरह मृत्यु बन्धन से मुक्त करें, (परन्तु) अमरता के सुत्रों से दूर न करें ॥१२॥

सामान्य व्याधियों से मुक्ति मिलने के लिए (उदा. जोड़ो का दर्द, सिरदर्द, खाँसी आदि)

अथ. १ / काण्ड १ / सुक्त १२ (२) / ऋषि - भृग्वङ्गिरा / देवता - यक्ष्मनाशन

अंङ्गे अंङ्गे शोचिषा शिश्रियाणं नमस्यन्तस्त्वा हविषा विधेम ।
अंकान्त्समंकान हविषा विधेम यो अग्रभीत् पर्वास्या ग्रभीता ॥२॥

अपनी ऊर्जा से अंग-प्रत्यंग में संव्याप्त हे सुर्यदेव! स्तुतियों एवं हवि द्वारा हम आपको और आपके समीपवर्ती देवों का अर्चन करते है। जिसके शरीरस्थ जोड़ों को रोगों ने ग्रसित कर रखा है, उसके निमित्त भी हम आपको पुजते हैं ॥२॥

अथ. १ / काण्ड - १ / सुक्त १२ (३) / ऋषि - भृग्वङ्गिरा / देवता - यक्ष्मनाशन

मुञ्च शीर्षक्त्या उत कास एनं परुष्परुराविवेशा यो अस्य ।
यो अभ्रजा वातजा यश्च शुष्मो वनस्पतीन्त्सचतां पर्वतांश्च ॥३॥

हे आरोग्यदाता सुर्यदेव! आप हमें सिरदर्द एवं कास (खाँसी) की पीड़ा से मुक्त करें। सन्धियों में घुसे रोगाणुओं को नष्ट करें। वर्षा, शीत एवं ग्रीष्म ऋतुओं के प्रभाव से उत्पन्न होने वाले वात, पित्त, कफ जनित रोगों को दूर करें। इसके लिये हम अनुककूल वातावरण के रूप में पर्वतों एवं वनौषधियों का सहारा लेते है ॥३॥

अथ. १ / काण्ड १ / सुक्त १२ (४) / ऋषि - भृग्वङ्गिरा / देवता - यक्ष्मनाशन

शं मे परस्मै गात्राय शमस्त्ववराय मे।
शं मे चतुभ्यों अङ्गेभ्यः शमस्तु तन्वे३ मम ॥४॥

हमारे सिर आदि श्रेष्ठ अंगों का कल्याण हो। हमारे उदर आदि साधारण अंगो का कल्याण हो। हमारे चारों अंगों (दो हाथों एवं दो पैरों) का कल्याण हो। हमारे समस्त शरीर को आरोग्य-लाभ प्राप्त हो॥४॥

दीर्घायु प्राप्त हो इसलिए

अथ - १ / काण्ड २ / सुक्त १३ (२) / ऋषि - अथर्वा / देवता - बृहस्पति

परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः ।
बृहस्पतिः प्रायच्छद् वास एतत् सोमाय राज्ञे परिधातवा उ ॥२॥

हे देवो! आप इस (बालक या जीव) को वास (वस्त्र या काया रूप आच्छादन) प्रदान करें तथा तेजस्विता धारण कराएँ। आप दीर्घ आयु प्रदान करें, वृद्धावस्था के उपरान्त मरने वाला बनाएँ। बृहस्पतिदेव ने यह आच्छादन राजा सोम को कृपापुर्वक प्रदान किया॥२॥

अथ – १/ काण्ड २/ सुक्त १३ (४)/ ऋषि – अथर्वा / देवता – आयु विश्वेदेवा

एह्यश्मानमा तिष्ठाश्मा भवतु ते तनूः ।
कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम् ।।४।।

हे बालक या साधक! आओ इस पत्थर (साधना परक दृढ़ आधार) पर स्थित हो जाओ, ताकि तुम्हारी काया पत्थर के समान दृढ़ बनें। देव शक्तियाँ तुम्हारी आयु को सौ वर्ष की करें।।४।।

मानसोपचार के लिए

ऋग्वेद ३/ मण्डल ७/ सुक्त ९३ (३)/ ऋषि – वसिष्ठ मैत्रावरूणि/ देवता – इन्द्राग्नी

उपो ह यद्विदथं वाजिनो गुर्धीभिर्विप्राः प्रमतिमिच्छमानाः ।
अर्वन्तो न काष्ठां नक्षमाणा इन्द्राग्नी जोहुवतो नरस्ते ।।३।।

श्रेष्ठ बुद्धि प्राप्ति की इच्छावाले, अन्नवान (आहूतियुक्त) विप्रगण जब यज्ञ के निमित्त जाते है, तो वे नेतृत्व क्षमता सम्पन्न लोग काष्ठो (समिधाओं अथवा युद्धक्षेत्र) में प्रविष्ठ चंचल (ज्वालाओं अथवा अश्वों के भाँती) इन्द्राग्नी का आवाहन करते हैं ।।३।।

सुचना – यज्ञीय अनुष्ठान से श्रेष्ठ बुद्धि – परमार्थ बुद्धि जाग्रत होती है, यज्ञ से मानसोपचार की प्रक्रिया संचालित कि जा सकती है।

शांति प्राप्ति के लिए

यजुर्वेद/ अध्याय ३४/ ऋचा – १७९३ (१), १७९४ (२), १७९५ (३), १७९६ (४), १७९७ (५)
ऋषि – शिवसंकल्प/ देवता – मन

यज्जाग्रतो दूरमुदैति देवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।१।।

जाग्रत अवस्था में जिस प्रकार मन दूर-दूर गमन करता है – सुप्तावस्था में भी उसी प्रकार (दूर-दूर) जाता है, वही निश्चितरूप से तेजस्वी इन्द्रियों का ज्योतिरूप (प्रवर्तक) है। जीवात्मा का एकमात्र दिव्य माध्यम वही (मन) है। इस प्रकार का वह हमारा मन श्रेष्ठ कल्याणकारी संकल्पों से युक्त हों ।।१।।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।२।।

सत्कर्मों में संलग्न मनीषीगण जिस मन से यज्ञीय श्रेष्ठ कर्मों को सम्पादित करते है, जो सम्पूर्ण प्राणियों के शरीर में विद्यमान है तथा यज्ञों में अपूर्व एवं आदरणीय भाव से जो सुशोभित होता है, वह हमारा मन श्रेष्ठ कल्याणकारी संकल्पों से युक्त हों ।।२।।

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्नऽ ऋते किं चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।३।।

प्रखर ज्ञान से सम्पन्न, चेतनशील तथा धैर्य सम्पन्न जो मन है, सम्पूर्ण प्राणियों के अन्तःकरण में अमर प्रकाश ज्योति स्वरूप है, जिसके बिना कोई भी कार्य सम्पादन सम्भव नहीं, ऐसा हमारा मन श्रेष्ठ कल्याणकारी शुभ संकल्पों से युक्त हो ।।३।।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।४।।

जिस अविनाशी मन की सामर्थ्य से सभी भूत, वर्तमान और भविष्यत् काल के ज्ञान को प्रत्यक्षीभूत किया जाता है तथा जिससे सप्त याज्ञिकों से युक्त यज्ञ को विस्तारित किया जाता है, ऐसा हमारा मन श्रेष्ठ शुभ संकल्पों से युक्त हो ।।४।।

यस्मिन्नृचः साम यजू ॐ षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः ।
यस्मिंश्चित्त ॐ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।।५।।

जिस मन में वैदिक ऋचाएँ प्रतिष्ठित है, जिसमें साम व यजुर्वेद के मन्त्र उसी प्रकार स्थित है, जिस प्रकार रथ के पहिये में आरे स्थित होते है तथा जिस मन में प्रजाओं के सम्पूर्ण चित्तों का ज्ञान समाहित है, ऐसा हमारा वह मन कल्याणकारी शुभ संकल्पों से युक्त हो ।।५।।

सभी को शांति प्राप्त हो इसलिए

यजुर्वेद/ अध्याय ३६/ ऋचा - १८८९ (१७)/ देवता - लिंगोक्त/ ऋषि - दध्यङ् आथर्वण

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ॐ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।१७।।

स्वर्गलोक, अन्तरिक्ष लोक तथा पृथिवीलोक हमें शांति प्रदान करें। जल शांति प्रदायक हो, औषधियाँ तथा वनस्पतियाँ शांति प्रदान करने वाली हो। सभी देवगण शांति प्रदान करें। सर्वव्यापी परमात्मा सम्पूर्ण जगत् में शांति स्थापित करें। शांति भी हमें परम शांति प्रदान करें ।।१७।।

स्वयं का कल्याण हो इसलिए

५ नवम्बर २०१७

सामवेद/ अध्याय - २१/ ऋचा - २७

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।२७।।

अति यशस्वी इन्द्रदेव हमारा कल्याण करने वाले हों। सर्व ज्ञाता पूषादेव हमारा मंगल करें। अहिंसित आयुध वाले गरूड़ हमारे हितकारक हो ज्ञान के अधिश्वर बृहस्पति देव हमारा कल्याण करें ।।२७।।

सामवेद/ अध्याय ७ / खण्ड २/ ऋचा - २०

शकेम त्वा समिधं साधया धियस्त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।
त्वमादित्याँ आ वह तान्ह्यश्यमस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ।।२०।।

हे अग्निदेव! आपको समिधाओं आदि से भली भाँति प्रज्वलित कर, हम देवताओं के लिए आहुतियाँ प्रदान करते हैं। आप हवि ग्रहण करने हेतु देवों को बुलाए और हमारा यज्ञ भली प्रकार संपन्न करें। यहाँ हम उनके आगमन के लिए उत्सुक हैं। हे अग्निदेव! आपकी मित्रता से हमें कल्याण की प्राप्ति हो ।।२०।।

व्यापार व्यवसाय

६ नवम्बर २०१७

ऋषि - अथर्वा/ देवता - विश्वेदेवा, इन्दाग्नी (इन्द्र, पथ, अग्नि, प्रपण, विक्रय, देवगण, धन, प्रजापति, सविता, सोम, धनरूचि, वैश्वानर, जातवेदा)/ अथ. १/ काण्ड ३/ सुक्त १५ / ऋचा १,४,५,६

इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न ऐतु पुरएता नो अस्तु ।
नुदन्नरातिं परिपन्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम् ।।१।।

हम व्यवसाय में कुशल इन्द्रदेव को प्रेरित करते हैं, वे हमारे पास पधारे, हमारे अग्रणी बनें, वे हमारे जीवन पथ के अवरोध को सताने वाले (व्यक्तियों) भूचरों को विनष्ट करते हुए हमें ऐश्वर्य प्रदान करने वाले हों ।।१।।

इमामग्ने शरणिं मीमृषो नो यमध्वानमगाम दुरम् ।
शुनं नो अस्तु प्रपणो विक्रयश्च प्रतिपणः फलीनं मा कृणोतु ।।
इदं हव्यं संविदानौ जुषेथां शुनं नो अस्तु चरितमुत्थितं च ।।४।।

हे अग्निदेव! हमसे हुई त्रुटीयों के लिये आप हमें क्षमा करें। हम जिस मार्ग - सुदूर पथ पर आ गये है, वहाँ वस्तुओं का क्रय-विक्रय हमारे लिये शुभ हो। हमारा हर व्यवहार हमें लाभ देनेवाला हो। आप हमारे द्वारा समर्पित हवियों को स्वीकार करें। आपकी कृपा से हमारा आचरण उन्नति और सुख देने वाला हो ।।४।।

येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।
तन्मे भूयो भवतु मा कनीयोऽग्ने सातघ्नो देवान् हविषा नि षेध ।।५।।

हे देवगणों! आप लाभ के अवरोधक देवों को इस आहुति से संतुष्ट करके लौटा दें। हे देवताओं! लाभ की कामना करते हुए हम जिस धन से व्यापार करते है, आपकी कृपा से वह धन कम न हो, बढ़ता ही रहे ।।५।।

येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।
तस्मिन् म इन्द्रो रूचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः ।।६।।

धन से धन प्राप्त करने की कामना करते हुए, हम जिस धन से व्यापार करना चाहते है, उसमें इन्द्रदेव, सवितादेव, प्रजापतिदेव, सोमदेव तथा अग्निदेव हमारी रूचि पैदा करें ।।६।।

कन्या विवाह

७ नवम्बर २०१७

अथ. १ / काण्ड २ / सुक्त ३६ (१) / ऋषि - पतिवेदन / देवता - अग्नि

आ नो अग्ने सुमतिं संभलो गमेदिमां कुमारीं सह नो भगेन ।
जुष्टा वरेषु समनेषु वल्गुरोषं पत्या सौभगमस्त्वस्यै ।।१।।

हे अग्ने! हमारी इस बुद्धिमती कुमारी कन्या को ऐश्वर्य के साथ सर्वगुण संपन्न वर प्राप्त हो। हमारी कन्या बड़ो के बीच में प्रिय तथा समान विचार वालों में मनोरम है। इसे पति के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हो ।।१।।

अथ. १ / काण्ड २ / सुक्त ३६ (३) / ऋषि - पतिवेदन / देवता - अग्निषोम

इयमग्ने नारी पतिं विदेष्ट सोमो ही राजा सुभगां कृणोति ।
सुवाणा पुत्रान् महिषी भवाति गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु ।।३।।

हे अग्निदेव! यह कन्या अपने पति को प्राप्त करें और राजा सोम इसे सौभाग्यवती बनाएँ। यह कन्या अपने पति को प्राप्त करके सुशोभित हो और (वीर) पुत्रों को जन्म देती हुयी घर की रानी बने ।।३।।

प्रसुती व्यवस्थित हो इसलिए

८ नवम्बर २०१७

अथ. १ / काण्ड - १ / सुक्त ११ (१) / ऋषि - अथर्वा
देवता - पूषा, अर्यमा, वेधा, दिक्, देवगण

वषट् ते पूषन्नस्मिन्त्सूतावर्यमा होता कृणोतु वेधाः ।
सिस्त्रतां नार्यृतप्रजाता वि पर्वाणि जिहतां सूतवा उ ।।१।।

हे अखिल विश्व के पोषक, श्रेष्ठजनों के हितैषी पृषा देवता! हम अपनी हवि समर्पित करते है। आप इस प्रसूता की सहायता करें। यह सावधानीपूर्वक अपने अंगों को प्रसव के लिये तयार करें - ढीला करें ।।१।।

अथ. १ / काण्ड १ / सुक्त ११ (६) / ऋषि - अथर्वा
देवता - पूषा, अर्यमा, वेधा, दिक्, देवगण

यथा वातो यथा मनो यथा पतन्ति पक्षिणः ।
एवा त्वं दशमास्य साकं जरायुणा पताव जरायु पद्यताम् ।।६।।

जिस प्रकार वायु वेगपूर्वक प्रवाहित होती है, पक्षी जिस वेग से आकाश में उडते है एवं मन जिस तिव्रगति से विषयों में लिप्त होता है, उसी प्रकार दसवे माह गर्भस्थ शिशु जेरी के साथ गर्भ से मुक्त होकर बाहर आये ।।६।।

सौभाग्य रक्षण हेतु

९ नवम्बर २०१७

अथ १ / काण्ड १ / सुक्त १४ (४) / ऋषि - भृग्वङ्गिरा / देवता - वरूण अथवा यम

असितस्य ते ब्रह्मणा कश्यपस्य गयस्य च ।
अन्तःकोशमिव जामयोऽपि नह्यामि ते भगम् ।।४।।

हे कन्ये! आपके सौभाग्य को हम असित ऋषि, गय ऋषि तथा कश्यप ऋषि के मंत्र के द्वारा उसी प्रकार बाँधकर सुरक्षित करते है, जिस प्रकार स्त्रियाँ अपने वस्त्रों-आभुषणों आदि को गुप्त रखकर सुरक्षित करते हैं।।४।।

बाष्कि (वर्षा) के लिए

१० नवम्बर २०१७

सामवेद / अध्याय २० / खण्ड ७ / ऋचा - १४, १५

ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात्प्रत्यङ्चित्रा बिभ्रदस्यायुधानि ।
पसानो अत्कं सुरभिं दृशे कं स्वा३र्ण नाम जनत प्रियाणि ।।१४।।

(मेघ के रूप में) जल धारण करने वाले वेन (देवता) उपर अन्तरिक्ष में स्थित रहते है। वे अपने अद्भूत शस्त्रों (विद्युत आदि) को धारण कर सुन्दर रूप में शोभायमान होते हैं। सूर्य की भाँती (प्राण पर्जन्य के रूप में) जल की वर्षा करते हैं ।।१४।।

द्रप्सः समुद्रमभि यज्जिगाति पश्यन् गृध्रस्य चक्षसा विधर्मन् ।
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानस्तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि ।।१५।।

प्राण पर्जन्य रूपी दिव्य प्रवाह एवं सुर्यदेव की तेजस्विता से युक्त, वेन देवता जब जल से अभिपूरित मेघों के समीप पहुँचते है, तब तिसरे दिव्य लोक में सूर्य तेज से विद्युत के रूप में चमकते हुए जल (प्राण पर्जन्य) की वर्षा करते हैं ।।१५।।

सामवेद / अध्याय १३ / खण्ड १ / ऋचा - ३

घृतं पवस्य धारया यज्ञेषु देववीतमः । अस्मभ्यं वृष्टीमा पव ।।३।।

हे सोमदेव! यज्ञ में देवों क्षरा चाहे गये आप धार रूप जल की वृष्टी करें ।।३।। (मुसलाधार वर्षा करें।)

सामवेद / अध्याय ८ / खण्ड ३ / ऋचा - ११

य इद्ध आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः द्युम्नाय सुतरा अपः ।।११।।

जो मनुष्य प्रज्वलित अग्नि में इन्द्रदेव के लिये आनन्दप्रद आहूति अर्पित करते हैं, उनकी तेजस्विता के लिये (श्रेष्ठ और सहजता से अन्न प्राप्ति हेतु) इन्द्रदेव जल वर्षा करते हैं ।।११।।

आवश्यकतानुसार बाष्कि (वर्षा)

ऋग्वेद ३ / मण्डल ८ / सुक्त १५ (६)
ऋषि - गोषूक्ति - अश्व सूक्ति काण्वायन / देवता - इन्द्र

तदद्या चित्त उक्थिनोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा । वृषपत्नीरपो जया दिवेदिवे ।।६।।

हे इन्द्रदेव! सनातन स्तुतिकर्त्ता आज भी आपके बल की स्तुति करते हैं। पर्जन्य की वर्षा करने वाले जलों को आप प्रतिदिन मुक्त करें अर्थात समयानुसार वर्षा करते रहे ।।६।।

पापक्षालन हेतु

११ नवम्बर २०१७

ऋग्वेद ३/ मण्डल ७/ सुक्त ८६ (५)
ऋषि - वसिष्ठ मैत्रावरूणि/ देवता - वरूण

वि द्रुग्धानि पित्र्या सृजा नोऽव या वयं चकृमा तनूभिः ।
अव राजन्पशुतृपं न तायुं सृजा वत्सं न दाम्नो वसिष्ठम् ।।५।।

हे वरूणदेव! आप हमारे स्वकृत एवं वंशानुगत पापों का शमन करें। हे राजन! हे वरूणदेव! चोर प्रायश्चित स्वरूप पशुओं को घासादि खिलाकर उन्हें तृप्त करके चोरी के पाप से उसी तरह मुक्त हो जाते हैं, जैसे बंधा हुआ बछडा मुक्त हो जाता है। आप हमें भी इसी तरह पापों से मुक्त करें ।।५।।

ऋग्वेद ३/ मण्डल ७/ सुक्त ८६ (६)
ऋषि - वसिष्ठ मैत्रावरूणि/ देवता - वरूण

न स स्वो दक्षो वरूण ध्रुतिः सा सुरा मन्युर्विभीदको अचित्तिः ।
अस्ति ज्यायान्कनीयस उपारे स्वप्नश्चनेदनृतस्य प्रयोता ।।६।।

वह पाप स्वयं के दोष से नहीं होता है, बल्कि मद्यपान, क्रोध, जुआ (द्युत क्रिडा) और अज्ञान आदि से उत्पन्न होता है। पाप के क्षेत्र में जो जेष्ठ (कुशल) हैं, वे कनिष्ठ (अल्पज्ञ) को पाप में लगाते हैं। ऐसे लोग वृत्ति बिगड़ जाने के कारण स्वप्न में भी पाप में प्रवृत्त रहते हैं। (तो जाग्रत अवस्था का क्या कहना? जाग्रत अवस्था में तो निरन्तर पाप में ही निरत रहते हैं।) ।।६।।

उत्तम सुखदायी मकान प्राप्ति के लिए

१२ नवम्बर २०१७

ऋग्वेद ३/ मण्डल ७/ सुक्त ८८ (६) / ऋषि - वसिष्ठ मैत्रावरूणि/ देवता - वरूण

य आपिर्नित्यो वरूण प्रियः सन्त्वामागांसि कृणवत्सखाते ।
मा त एनस्वन्तो यक्षिन् भुजेम यन्धि ष्मा विप्रः स्तुवते वरूथम् ।।६।।

हे वरूणदेव! आपके नित्य प्रिय बन्धु होकर भी जिन वसिष्ठ ने पूर्व समय में आपके प्रति अपराध किया था, वे (भी) आपके मित्र हों। हे पूजनीय वरूणदेव! हम आपके है, इसलिये हमें पाप मुक्त कर उत्तम सुखदायी आवास प्रदान करें ।।६।।

आत्मानंद प्राप्ति के लिए

१३ नवम्बर २०१७

ऋग्वेद ३/ मण्डल ७/ सुक्त ८९ (३)/ ऋषि - वसिष्ठ मैत्रावरूणि/ देवता - वरूण

क्रत्वः समह दीनता प्रतीपं जगमा शुचे । मृळा सुक्षत्र मृखय ।।३।।

हे धनवान और पवित्र वरूणदेव! हमने दीनता और असमर्थता के कारण श्रौत-स्मार्त कर्मों की अवहेलना की है, इसलिये हम दुःखी है। हे श्रेष्ठ शांत स्वभाव वाले वरूणदेव, आप हमें आनन्दित करें ।।३।।

यजुर्वेद/ अध्याय ३५/ ऋचा - १८५९ (९)/ ऋषि - संकसुक/ देवता - विश्वेदेवा

कल्पन्तां ते दिशस्तुभ्यमापः शिवतमास्तुभ्यं भवन्तु सिन्धवः ।
अन्तरिक्ष ॐ शिवं तुभ्यं कल्पन्तां ते दिशः सर्वाः ।।९।।

आपके लिए दिशाएँ हितकारी हों। जल आपके लिये मंगलप्रद हो, समुद्र, अन्तरिक्ष तथा सम्पूर्ण दिशाएँ आपके लिये आनन्ददायक हों ।।९।।

खेती उत्पादन

१४ नवम्बर २०१७

ऋग्वेद २/ मण्डल ४ / सुक्त ५७ / ऋषि – वामदेव गौतम/ देवता – शुन

शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम् ।
शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय ।।४।।

अश्व आदि वाहन हमारे निमित्त हर्षकारी हों। मानव हमारे लिये हर्षकारी हो तथा हल हर्षित होकर कृषि कर्म करें। हल सुखपूर्वक खेतों में चले। हल के जुवे सुखपूर्वक बाँधे जाएँ तथा चाबुक भी मधुरता के साथ प्रयुक्त हों।।४।।

ऋग्वेद २/ मण्डल ४ / सुक्त ५७ / ऋषि – वामदेव गौतम/ देवता – शुनासीर

शुनासीराविमां वाचं जुषेथां यद्दिवि चक्रथुः पयः । तेनेमामुप सिञ्चतम् ।।५।।

हे शुना और सीर! आप दोनों हमारी इस प्रार्थना को स्वीकार करें। आप दोनों ने द्युलोक में जिस जल को उत्पन्न किया है, उस जल के द्वारा आप इस धरती को सिंचित करें ।।५।।

ऋग्वेद २/ मण्डल ४ / सुक्त ५७ / ऋषि – वामदेव गौतम/ देवता – सिता

इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु तां पूषानु यच्छतु ।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामत्तरां समाम् ।।७।।

इन्द्रदेव हल की मुठ सँभालें। पूषादेव उसकी देखभाल करें, तब धरती श्रेष्ठ धान्य तथा जल से परिपूर्ण होकर हमारे लिये धान्य आदि का दोहन करें ।।७।।

सभी के कल्याण हेतु

१५ नवम्बर २०१७

यजुर्वेद/ अध्याय ३६/ ऋचा – १८७४ (२)/ ऋषि – दध्यङ् आथर्वण/ देवता – बृहस्पति

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु ।
शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ।।२।।

हे बृहस्पति देव! आप हमारे आँख की, हृदय की तथा मन की कमजोरियों को दूर करें। हे भुवनों के पालक! आप हम सभी का कल्याण करें ।।२।।

यजुर्वेद/ अध्याय ३६/ ऋचा – १८७६ (४)/ ऋषि – वामदेव/ देवता – इन्द्र

कया नश्चित्रऽ आ भुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ।।४।।

सबसे श्रेष्ठ और अद्भूत शक्ति सम्पन्न परमात्मा, कल्याणकारी शक्तियों एवं रक्षण के साधनों से मित्र के समान हम सबका कल्याण करता है ।।४।।

यजुर्वेद/ अध्याय ३६/ ऋचा – १८८० (८)/ ऋषि – दध्यङ् आथर्वण/ देवता – इन्द्र

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।।८।।

सबके स्वामी ऐश्वर्यशाली इन्द्रदेव आप (दो पैरोवाले) हम सबका तथा चार पैरवाले (पशुओं) का भी कल्याण करने वाले हों ।।८।।

संरक्षण प्राप्ति के लिए

१६ नवम्बर २०१७

सामवेद/ अध्याय - २१/ ऋचा - २४

यो नः स्वोऽरणो यश्च निष्ठ्यो जिघांसति ।
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरं शर्म वर्म ममान्तरम् ।।२४।।

जो हमारे बन्धू होकर द्वेष करते है, गुप्त रूप से हमारे संहार की इच्छा रखते है, उन्हें सब देवगण नष्ट कर दे। वेद मंत्र ही हमारे कवच रूप है, वे हमारा कल्याण करें ।।२४।।

अथ.१/ काण्ड - ८/ सुक्त १/ ऋचा - ११/ ऋषि - ब्रह्मा/ देवता - आयु

रक्षन्तु त्वाग्नयो ये अप्स्व१न्ता रक्षतु त्वा मनुष्या३ यमिन्धते ।
वैश्वानरो रक्षतु जातवेदा दिव्यस्त्वा मा प्र धाग् विद्युता सह ।।११।।

हे रक्षा की कामना करने वाले पुरूष! आवाहन करने योग्य अग्निदेव, वैश्वानर अग्निदेव विद्युत रूप अग्निदेव एवं जल में निवास करने वाले अग्निदेव तुम्हारी रक्षा करें ।।११।।

अथ - १/ काण्ड २/ सुक्त १३ (१)/ ऋषि - अथर्वा / देवता - अग्नि

आयुर्दा अग्ने जरसं वृणानो घृतप्रतीको घृतपृष्ठो अग्ने ।
घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रानभि रक्षतादिमम् ।।१।।

हे तेजस्वी अग्निदेव! आप जीवन प्रदान करनेवाले तथा स्तुति ग्रहण करने वाले है। आप धृत के समान ओजस्वी तथा धृत का सेवन करनेवाले है। आप मधुर गव्य (गौ या प्रकृति जन्य) पदार्थों का सेवन करके इस (बालक या प्राणि) की सब प्रकार से रक्षा करें जैसे पिता, पुत्र की रक्षा करता है।।१।।

सभी को आरोग्य, शांति मिले (पीड़ा रहित जीवन के लिए)

१७ नवम्बर २०१७

अथ.१/ काण्ड - ८/ सुक्त २/ ऋचा - १३/ ऋषि - ब्रह्मा/ देवता - आयु

अग्नेष्टे प्राणममृतादायुष्मतो वन्वे जातवेदसः ।
यथा न रिष्या अमृतः सजूरसस्तत् ते कृणोमि तदु ते समृध्यताम् ।।१३।।

हे पुरूष! हम अमरता और आयु को धारण करने वाले जातवेदा अग्निदेव से तुम्हारे प्राणों को सतेज करने की याचना करते है। हमारे द्वारा किये गये शान्तिकर्म तुम्हें समृद्धशाली बनाएँ। उनके प्रभाव से तुम पीड़ारहित, अमर और सुखी जीवन यापन करो ।।१३।।

अथ.१/ काण्ड - ८/ सुक्त २/ ऋचा - २०/ ऋषि - ब्रह्मा/ देवता - आयु

आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः ।
सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् ।।२०।।

हे पुरूष! यह तुम्हारा पुनः नया जन्म सा हुआ है, क्योंकि हम तुम्हे मृत्यु के मुख से खींचकर लाए है। अब तुम्हारे समस्त अंग आदि पूर्ण स्वस्थ रहें एवं तुम्हें पूर्ण आयु प्राप्त हो ।।२०।।

अथ. १/ काण्ड - ८/ सुक्त २/ ऋचा - २१/ ऋषि - ब्रह्मा/ देवता - आयु

व्यवात् ते ज्योतिरभूदप त्वत् तमो अक्रमीत् ।
अप त्वन्मृत्युं निर्ऋतिमप यक्ष्मं नि दध्मसि ।।२१।।

हे पुरूष! तुम्हारे पास जो अन्धकार था उसे हटा दिया है एवं तुम्हें नई जीवन-ज्योति मिल गई है। पाप देवता निर्ऋति एवं मृत्यु को तुमसे दूर हटा दिया है। अब तुम्हारे क्षयकारी रोग को हमने नष्ट कर दिया है। तुम्हें दीर्घ आयु एवं निरोगता प्राप्त हो ।।२१।।

अथ. १/ काण्ड – ८/ सुक्त २/ ऋचा – ३/ ऋषि – ब्रह्मा/ देवता – आयु

इह तेऽसुरिह प्राण इहायुरिह ते मनः ।
उत् त्वा निर्ऋत्याः पाशेभ्यो दैव्या वाचा भरामसि ।।३।।

हे आयु की इच्छा करने वाले पुरूष! इसी (शरीर) में तेरे प्राण, आयु, मन तथा जीवन स्थिर रहे। जिन रोग रूपी पाशों (बन्धनों) से तुम्हारी अधोगति हो रही थी, हम मंत्रों द्वारा उनसे तुम्हें मुक्त करते हैं ।।३।।

अथ. १/ काण्ड – ८/ सुक्त २/ ऋचा – ४/ ऋषि – ब्रह्मा/ देवता – आयु

उत् क्रामातः पुरुष माव पत्था मृत्योः पड्वीशमवमुञ्चमानः ।
मा च्छित्था अस्माल्लोकादग्नेः सूर्यस्य संदृशः ।।४।।

हे पुरूष! तुम रोगरूप बन्धनों को काटकर मृत्यु के पाशजाल से मुक्त हो। अग्निदेव एवं सुर्यदेव के दर्शन करते हुए, इस पृथ्वी का त्याग न करो ।।४।।

अथ. १/ काण्ड – ८/ सुक्त २/ ऋचा – ५/ ऋषि – ब्रह्मा/ देवता – आयु

तुभ्यं वातः पवतां मातरिश्वा तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यापः ।
सूर्यस्ते तन्वे३ शं तपाति त्वां मृत्युर्दयतां मा प्र मेष्ठाः ।।५।।

हे पुरूष! अन्तरिक्ष में रहने वाली वायु तुम्हारे लिये सुखदायक हा, जल अमृत के समान हो, सुर्यदेव सुखदायक ताप प्रदान करें एवं मृत्युदेव की दया से दीर्घ जीवन यापन करो ।।५।।

बुद्धि को सद्मार्ग मिले

१८ नवम्बर २०१७

ऋग्वेद २ – ३.६२.१०

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राण स्वरूप, दुःखनाशक, सुख स्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें ।

मनोकामना पूर्ति के लिए

१९ नवम्बर २०१७

ऋग्वेद ३/ मण्डल ७/ सुक्त १३ (१) / ऋषि – वसिष्ठ मैत्रावरूणि/ देवता – वैश्वानर अग्नि

प्राग्नये विश्वशुचे धियन्धेऽसुरघ्ने मन्म धीतिं भरध्वम् ।
भरे हविर्न बर्हिषि प्रीणानो वैश्वानराय यतये मतीनाम् ।।१।।

सबको प्रेरणा देनेवाले (यज्ञ) कर्म को धारण करने वाले, असुरों का संहार करने वाले अग्निदेव के निमित्त हम स्तुतिसहित यज्ञ कर रहे है। वे प्रसन्न होकर हमारी मनोकामनाओं को पूर्ण करें ।।१।।

ऋग्वेद ३/ मण्डल ७/ सुक्त ६३ (३) / ऋषि – वसिष्ठ मैत्रावरूणि/ देवता – पूर्वार्ध्द सूर्य

विभ्राजमान उषसामुपस्थाद् रेभैरुदेत्यनुमद्यमानः ।
एष मे देवः सविता चच्छन्द यः समानं न प्रमिनाति धाम ।।३।।

अत्यंत प्रकाशमान सुर्यदेव अपने भक्तों की स्तुति सुनते हुए उषाओं के बीच में उदित होते है। ये हमारी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं और अपने तेज को कभी कम नहीं होने देते ।।३।।

ऋग्वेद ३/ मण्डल ८/ सुक्त १ (६) / ऋषि – मेधातिथि – मेध्यातिथि काण्व/ देवता – इन्द्र

वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुरभुञ्जतः ।
माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे ।।६।।

हे इन्द्रदेव! आप हमारे जन्मदाता पिता की अपेक्षा अधिक धनवान है। पालन न करने वाले भाई से भी अधिक धनवान है। सबके पालनकर्ता इन्द्रदेव, आप हमारी माता के समतुल्य है। हम धन धान्य से परिपूर्ण जीवन की कामना करते है। आप हमें महान बनाएँ ।।६।।

ऋग्वेद ३/ मण्डल ८/ सुक्त ४ (७)/ ऋषि – देवातिथी काण्व/ देवता – इन्द्र

मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव ।
महत्ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम् ।।७।।

महान बलशाली हे इन्द्रदेव! आपकी मित्रता के प्रभाव से हम किसी से भयभीत न हो और न कभी थकें। उपासकों की कामना पूर्ति करने वाले हे देव! आपके सत्कार्य प्रशंसनीय है, हम तुर्वश और यदु को भी प्रसन्नता की स्थिति में देखें ।।७।।

मनोकामना पूर्ण होकर शांति प्राप्ति हेतु

ऋग्वेद ३ / मण्डल ८/ सुक्त २४ (६)/ ऋषि – विश्वमना वैयश्व/ देवता – इन्द्र

आ त्वा गोभिरिव व्रजं गीर्भिर्ऋणोम्यद्रिवः । आ स्मा कामं जरितुरा मनः पृण ।।६।।

हे वज्रधारी इन्द्रदेव! जिस प्रकार गोपालक गौओं के साथ गोशाला में प्रवेश करता है, उसी प्रकार हम अपनी प्रार्थनाओं के साथ आपके समीप पहुँचते हैं। आप हमारी मनोकामनाओं को पूर्ण करके हमें शान्ति प्रदान करें ।।६।।

विभिन्न समस्याएँ (शरीरस्वास्थ)

२० नवम्बर २०१७

अथर्ववेद १/ काण्ड ९/ सुक्त १३/ ऋचा – २, ३, ४, ७, ८, १०, ११, १३, १४, १५, १६, १७, १८, २१
ऋषि – भृग्वंगिरा/ देवता – सर्वशीर्षमयाथ (शिरः रोग दूरीकरण)

कर्णाभ्यां ते कङ्कूषेभ्यः कर्णशूलं विसल्पकम् । सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।२।।

आपके कानों और कानों के भीतरी भाग से कर्णशुल और विसकल्प (विशेष कष्ट देने वाले) रोग को हम दूर करते है तथा सभी शीर्ष रोगों को हम आपसे दूर करते है ।।२।।

यस्य हेतोः प्रच्यवते यक्ष्मः कर्णत आस्यतः । सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।३।।

जिसके कारण यक्ष्मा रोग कान और मुख से बहता है, उन सभी शीर्ष रोगों को हम आपसे बाहर करते हैं ।।३।।

यः कृणोति प्रमोतमन्धं कृणोति पुरुषम् । सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।४।।

जो रोग मनुष्य को बहरा और अन्धा कर देते है, उन सभी शीर्ष रोगों को हम आपसे दूर हटाते हैं ।।४।।

य ऊरू अनुसर्पत्यथो एति गवीनिके । यक्ष्मं ते अन्तरङ्गेभ्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।७।।

जो रोग जंघाओं की ओर बढ़ता है और गवीनिका नाड़ियों में पहुँच जाता है, उस यक्ष्मारोग को आपके भीतरी अंगों से हम बाहर निकालते है ।।७।।

यदि कामादपकामाद्धृदयाज्जायते परि । हृदो बलासमङ्गेभ्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।८।।

जो इच्छाकृत कार्यों अथवा बिना कामना से हृदय के समीप उत्पन्न होता है, उस कफ को हृदय और शेष अंगों से हम बाहर निकालते हैं ।।८।।

आसो बलासो भवतु मूत्रं भवत्वामयत् । यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् ।।१०।।

कफ शरीर से बाहर आये, आम दोष मूत्ररूप से बाहर आए। सभी यक्ष्मारोगों के विष को मन्त्र सामर्थ्य द्वारा हम बाहर निकालते हैं ।।१०।।

बहिर्बिलं निर्द्रवतु काहाबाहं तवोदरात् । यक्ष्माणां सर्वेषां विष निरवोचमहं त्वत् ।।११।।

काहाबाह अर्थात् फड़फड़ाने वाले रोग आपके पेट से द्रवीभूत होकर बाहर आए, सभी यक्ष्मारोगों के विष-विकारों को हम मन्त्र सामर्थ्य से आपके शरीर से बाहर करते हैं ।।११।।

याः सीमानं विरुजन्ति मूर्धानं प्रत्यर्षणीः । अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् ।।१३।।

जो सीमाभाग को पीड़ित करते है और सिर तक बढ़ते जाते है, वे रोग दूर होकर रोगी के लिए कष्टकारक न होते हुए शरीर के रन्ध्रों से द्रवरूप होकर बाहर निकले ।।१३।।

या हृदयमुपर्षन्त्यनुतन्वन्ति कीकसाः । अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् ।।१४।।

जो हृदय और हँसुली (ग्रीवास्थि) की कीका नामक हड्डियाँ हृदय क्षेत्र में फैलती है, वे सभी वेदनाएँ दोषरहित और कष्टरहित (हिंसारहित) होती हुई शारिरीक रन्ध्रों से द्रवरूप होकर बाहर निकले ।।१४।।

याः पार्श्वे उपर्षन्त्यनुनिक्षन्ति पृष्टीः । अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् ।।१५।।

जो अस्थियाँ पार्श्व (पसलियों) में जाती है और पीठ भाग तक फैलती है, वे रोगरहित और मारक न बनती हुई शारिरीक छिद्रों (रन्ध्रों) से द्रवीभूत होकर बाहर निकले ।।१५।।

यास्तिरश्चीरूपर्षन्त्यर्षणीर्वक्षणासु ते । अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् ।।१६।।

जो अस्थियाँ तिरछी जाती हुई आपकी पसलियों में प्रवेश करती है, वे भी रोगरहित और अमारक होकर द्रवीभूत होकर बाहर निकल जाएँ ।।१६।।

या गुदा अनुसर्पन्त्यान्त्राणि मोहयन्ति च । अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् ।।१७।।

गुदा भाग तक फैली हुई जो अस्थियाँ आँतों को अवरूद्ध करती है, वे भी बिना कष्ट दिए रोगविहीन होकर शारिरीक छिद्रों से बाहर निकल जाएँ ।।१७।।

या मज्ज्ञो निर्धयन्ति परूंषि विरुजन्ति च । अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् ।।१८।।

वे अस्थियाँ जो मज्जाभाग को रक्तहीन करती है और जोड़ों में वेदना पैदा करती है, वे बिना कष्ट दिए रोगरहित होकर शारिरीक रन्ध्रों से बाहर निकलें ।।१८।।

परिवार में शांति और समन्वय के लिए

२१ नवम्बर २०१७

अथ. १/ काण्ड ३/ सुक्त ३/ ऋचा - २,३,४,५/ ऋषि - अथर्वा/ देवता - चंद्रमा, सांमनस्य

अनुव्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु संमनाः ।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम् ।।२।।

पुत्र अपने पिता के अनुकूल कर्म करने वाला हो और अपनी माता के साथ समान विचार से रहने वाला हो। पत्नी अपने पति से मधुरता तथा सुख से युक्त वाणि बोले ।।२।।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ।।३।।

भाई अपने भाई से विद्वेष न करें और बहन अपनी बहन से विद्वेष न करें। वे सब एक विचार तथा एक कर्म वाले होकर परस्पर कल्याणकारी वार्तालाप करें ।।३।।

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः ।
तत् कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः ।।४।।

जिसकी शक्ति से देवगण विपरीत विचार वाले नहीं होते है और परस्पर विद्वेष भी नहीं करते है, उस समान विचार को सम्पादित करने वाले ज्ञान को हम आपके घर के मनुष्यों के लिये (जाग्रत या प्रयुक्त) करते है ।।४।।

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः ।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोमि ।।५।।

आप छोटों-बड़ों का ध्यान रखकर व्यवहार करते हुए, समान विचार रखते हुए तथा समान कार्य करते हुए पृथक न हों। आप एक दूसरे से प्रेमपूर्वक वार्तालाप करते हुए पधारें। हे मनुष्यों! हम भी आपके समान कार्यों में प्रवृत्त होते है ।।५।।

कार्य में सफलता हेतु

ऋग्वेद ३/ मण्डल ७/ सुक्त ९४ (२)/ ऋषि - वसिष्ठ मैत्रावरूणि/ देवता - इन्द्राग्नी

शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः । ईशाना पिप्यतं धियः ।।२।।

हे इन्द्र और अग्निदेव! उपासक की प्रार्थना सुने तथा उसकी वाणी को ध्यान में रखे। आप ईश्वर है, इसलिए अनुष्ठान किये हुये कार्य को सफल करें ।।२।।

पितृमुक्ति हेतु

यजुर्वेद / अध्याय ३८/ ऋचा - १९२६ (९), १९३२ (१५)

यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ।।९।।

पितृगणों तथा अङ्गिराओं से युक्त यम देवता के लिए ये आहुतियाँ समर्पित है। धर्म (यज्ञ विशेष) के विस्तार के लिए ये आहुतियाँ है। पितृगणों की तृप्ती के लिए यह आहूति समर्पित है ।।९।।

स्वाहा पूष्णे शरसे स्वाहा ग्रावभ्यः स्वाहा प्रतिरवेभ्यः ।
स्वाहा पितृभ्यऽ ऊर्ध्वबर्हिर्भ्यो घर्मपावभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्यां ॐ स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः ।।१५।।

स्नेहकारी पूषा, प्राणों, शब्द करने वाले प्राणियों, सोमपायी, धर्म (यज्ञ विशेष) को पवित्र करने वाले पितृगणों, द्युलोक, पृथ्वीलोक तथा सम्पूर्ण देवगणों के लिए ये आहूतियाँ समर्पित की जा रही है ।।१५।।

कल्याणकारी कृपादृष्टी के लिए

ऋग्वेद ३/ मण्डल ७/ सुक्त ८४ (५) / ऋषि - वसिष्ठ मैत्रावरूणि/ देवता - इन्द्रावरूण

इयमिन्द्रं वरूणमष्ट मे गीः प्रावत्तो के तनये तूतुजाना ।
सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।।५।।

इन्द्र और वरूणदेव तक हमारी स्तुतियाँ पहुँचे। वे हमारी एवं हमारे पुत्र-पौत्रों की रक्षा करें। हम उत्तम रत्नयुक्त होकर सत्कर्मरूप यज्ञ संपन्न करें। आप अपनी कल्याणकारी संरक्षक शक्तियों से हमारा पालन करें ।।५।।

विश्व सुनियंत्रित रखने हेतु

ऋग्वेद ३/ मण्डल ७/ सुक्त ६६ (१०) / ऋषि - वसिष्ठ मैत्रावरूणि/ देवता - आदित्यगण

बहवः सूरचक्षसोऽग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
त्रीणि ये येमुर्विदथानि धीतिभिर्विश्वानि परिभूतिभिः ।।१०।।

अनेकों सुर्य की तरह तेजस्वी, अग्नि रूप जिव्हा वाले, यज्ञ के विस्तारक ये (मित्रादि देव) विश्व के तिनों स्थानों (द्युलोक, अन्तरिक्ष एवं पृथ्वी) को श्रेष्ठ विभुतियों द्वारा सुनियंत्रित रखते है ।।१०।।

यजुर्वेद - अध्याय ३९/ १९४६ - १/ १९४७ - २/ १९४८ - ३

स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः । पृथिव्यै स्वाहाग्नसे स्वाहान्तरिक्षाय ।
स्वाहा वायवे स्वाहा दिवे स्वाहा सुर्याय स्वाहा ।।१।।

प्राणों के अधिपति (हिरण्यगर्भ) सहित उत्तम प्राणों के लिये, पृथ्वी के लिये, अग्नि के लिये, अन्तरिक्ष के लिये, वायु देवता के लिये, द्युलोक के लिये तथा सुर्यदेव के लिये ये आहुतियाँ समर्पित की जा रही है ।।१।।

दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा भ्द्यः स्वाहा
वरूणाय स्वाहा । नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वाहा ।।२।।

सभी दिशाओं के लिए, चन्द्रमा के लिए, नक्षत्रों के लिए, जल समूहों के लिए, नाभि (भुवनस्थ नाभिः) यज्ञ देवों के लिए तथा पवित्रता का संचार करने वाले देवता के लिए ये आहूतियाँ समर्पित की जा रही है ।।२।।

उत्तम प्रजा निर्मिती हेतु

ऋग्वेद ३/ मण्डल ७/ सुक्त ९१ (३)/ ऋषि - वसिष्ठ मैत्रावरूणि/ देवता - वायु

पीवोअन्नाँ रयिवृधः सुमेधाः श्वेतः सिषक्ति नियुतामभिश्रीः ।
ते वायवे समनसो वि तस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः ।।३।।

उत्तम मेधा वाले, अपने घोड़ों के आश्रय दाता, श्वेतवर्ण वायुदेव प्रचुर अन्न वाले समृद्ध जनों को तुष्ट करते है। वे नेतृत्व क्षमता वाले लोग भी समान मन होकर वायुदेव की यज्ञ के द्वारा उपासना करते हैं। उन (वायुदेव) ने सुन्दर प्रजाओं ा निर्माण किया ।।३।।

यजुर्वेद / अध्याय ३८/ ऋचा - १९३१ (१४)

इषे पिन्वस्वोर्जे पिन्वस्व ब्रह्मणे पिन्वस्व क्षत्राय पिन्वस्व द्यावापृथिवीभ्यां पिन्वस्व ।
धर्मासि सुधर्मामेन्यस्मे नृम्णानि धारय ब्रह्म धारय क्षत्रं धारय विशं धारय ।।१४।।

हे यज्ञदेव! अन्न की वृद्धी तथा बल पराक्रम के लिये सम्पूर्ण प्रजा को आप पुष्ट बनाएँ। ब्राह्मणत्व तथा क्षत्रियत्व की वृद्धी के लिए प्रजा को पृष्ट बनाएँ। द्युलोक और पृथिवी लोक के विस्तार के लिए प्रजा पृष्ट हो। हे परमात्मन! आप उत्तम रीति से समस्त प्रजा एवं राष्ट्र को धारण करने में समर्थ है। आप हिंसारहित है। मनुष्यों के लिए हितकारी ऐश्वर्य हमें प्रदान करें। आप हमें ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व तथा व्यापार की क्षमता प्रदान करें ।।१४।।

स्वामी हरदास स्वयंसिद्ध पीठ

स. नं. ५०/७, शक्तिदाता, सिद्ध नगर, वडगांव शेरी, पुणे. ४११०१४. महाराष्ट्र.
संपर्क क्र. : ०२० - ६६११७९०४/०६/२१/०२/०३/०८ फैक्स : ०२० - ६६११७९३४
मो. ७३८५३३५७५६/ ९९७०५६१२३४/ ९८६०९६४३२३
ई मेल - drswamihardas@hotmail.com वेब - www.shls.info / www.siddhamandir.org

वैदिक संशोधन मंडल, पुणे (आदर्श संस्कृत शोध संस्थान) के सौजन्य से

वेद सिद्ध विद्या (स्वयंसिद्ध पद्धति) - संक्षिप्त जानकारी

परमात्मा से प्राप्त वेद ज्ञान का महासागर है क्योंकि इनमें सभी विषयों की जानकारी है। परमात्मा से यह ज्ञान प्राप्त हुआ है इसलिए इसमें परमात्मा की शक्ति है। स्वयंसिद्ध पद्धति से इन शक्ति स्पंदनों का परिवर्तन संकल्पनात्मक, निर्माणकारी, सकारात्मक शक्तिशाली स्पंदनों में किया जा सकता है जिससे संकल्प के अनुसार कार्य सफल होते है और इसका शक्ति प्रक्षेपण करने से विश्व में कहीं भी और सभी जगहों पर सभी वस्तुओं के लिए उपयोग होता है।

- इसका पहला प्रशिक्षण संस्था में - दि. ७ से ९ सितंबर २००९ को किया गया था।
- इसके बाद इसके अनेक सफल प्रयोग किए गए, इससे प्राप्त परिणाम अविश्वसनिय तथा आश्चर्यकारक मिले और मिलते रहे।
- वेदों में विश्व तथा जीवन संबंधित हर विषय का ज्ञान, विज्ञान है? इसलिए वेदों की ऋचाओं का स्वयंसिद्ध पद्धति से उपयोग से विश्व तथा विश्व में सभी सजीव और निर्जीव सभी के प्रश्न हल करके सभी का जीवन वैभवशाली बना सकते है। अनुभवों के आधार पर यहाँ जीवन संबंधीत कुछ प्रश्नों के लिए शक्ति प्रक्षेपण किया जा रहा है। इसका सभी लाभ ले।

विनम्र प्रार्थना -

(१) सभी वेदाभ्यासी, वेद प्रणियों से विनम्र प्रार्थना करते है, कृपया यहाँपर दि गई ऋचाओं का शक्ति स्पंदनों का स्वयंसिद्ध पद्धति से शक्ति प्रक्षेण हर दिन दोपहर ३ बजे विषयों के अनुसार दिनांक के अनुसार होगा। इस समय के बाद कभी भी आपके सुविधा के अनुसार उन ऋचाओं के पठन के पूर्व आवश्यकता के अनुसार जाँच (चेकअप) करें क्योंकि यह सायंटिफिक कार्यक्रम है। जाँच पूर्व और पश्चात से सायंटिफिक पद्धति से परिणाम प्राप्ती का अभ्यास किया जा सकता है। यह जाँच संबंधितों को करना आवश्यक है।

- अब संबंधित ऋचाओं का भावार्थ पर ध्यान देते हुए अंदाजसे १ घंटा पठन करें।
- फिर आवश्यक जाँच करें रिपोर्ट तयार करें।

(२) जो संस्कृत नहीं पढ़ सकते वे भी उन संबंधित ऋचाओं का केवल भावार्थ ध्यान देते हुए पढ़े, उन्हे भी करीब करीब उपरनिर्दिष्ट (१) इतना परिणाम प्राप्त हो सकता है।

(३) अन्य सभी विश्वकल्याण साधना करें उन्हे भी लाभ होगा।

- साधना सभी अंदाजसे १ घंटा करें।

अधिक जानकारी हेतू संपर्क - स्वामी हरदास स्वयंसिद्ध पीठ से करें। सहयोगी संस्था स्वामी हरदास फाऊंडेशन - आदर्श संस्कृत शोध संस्था (वैदिक संशोधन मंडल, पुणे - ३७) इनके सहयोगसे।

अ.नु.	प्रक्षेपण की तीथि	उद्देश्य/कार्य	वेद /अध्याय/ ऋचा	फलप्राप्ती	१००%	७५%
१	४ नवम्बर	आरोग्य, शांति प्राप्ती	ऋ. ७. ५९. १२	आपको आरोग्य, शांति प्राप्त हो।	१३/११	२२/११
२	५ नवम्बर	स्वयं का कल्याण	सा. २१. २७/ ७.२.२०	स्वयं का कल्याण हेतु	१४/११	२३/११
३	६ नवम्बर	व्यापार - व्यवसाय	अ. ३.१५.१और ४-६	व्यापार व्यवसाय में वृद्धि हेतु	१५/११	२४/११
४	७ नवम्बर	विवाह	अ. २. ३७. १और ३	कन्याओं का विवाह हो इसलिए	१६/११	२५/११
५	८ नवम्बर	प्रसुती सहजता से	अ. १. ११. १और ६	प्रसुती में कोई बाधा न आये व सहजता से हो	१७/११	२६/११
६	९ नवम्बर	सुहाग सुरक्षा	अ. १. १४. ४	पती के लंबी उमर के लिए	१८/११	२७/११
७	१० नवम्बर	वर्षा	सा. २०. ७. १४और १५	समय पर वर्षा हो और भूजल स्तर बढ़े	१९/११	२८/११
८	११ नवम्बर	पापक्षालन	ऋ. ७. ८६. ५	पापों का निवारण	२०/११	२९/११
९	१२ नवम्बर	आवास प्राप्ती	ऋ. ७. ८८. ६	स्वयं का घर प्राप्ती हेतु	२१/११	३०/११
१०	१३ नवम्बर	आनंद प्राप्ती	ऋ. ७.८९. ३	आनंद की प्राप्ती हेतु	२२/११	१/१२
११	१४ नवम्बर	खेती	ऋ. ४. ५७. ४,५ और ७	खेती की उर्वरकता बढ़ाने हेतु	२३/११	२/१२
१२	१५ नवम्बर	सभी का कल्याण	य. ३८. २,४ और ८	सभी के कल्याण हेतु	२४/११	३/१२
१३	१६ नवम्बर	संरक्षण	सा.२१.२४/अ.८.१.११	सभी का संरक्षण हो	२५/११	४/१२
१४	१७ नवम्बर	पिड़ा रहित होना	अ. ८. २. १३	पिड़ा से मुक्ति पाने हेतु	२६/११	५/१२
१५	१८ नवम्बर	बुद्धि	ऋ. ३. ६२. १०	बुद्धि को सद्मार्ग एवं गती देने हेतु	२७/११	६/१२
१६	१९ नवम्बर	मनोकामना पूर्ती	ऋ. ८. १. ६	सात्विक मनोकामना पूर्ती हेतु	२८/११	७/१२
१७	२० नवम्बर	विभिन्न समस्याएँ	अ ९. १३. १३ और १६	बिमारियों से छुटकारा पाने के लिए	२९/११	८/१२
१८	२१ नवम्बर	समन्वय	अ. ३. ३०. २-५	परिवार में सभी का समन्वय हो इसलिए	३०/११	९/१२

स्वामी हरदास स्वयंसिद्ध पीठ

सिद्ध भवन, स. नं. ५०/७, शक्तिदाता, सिद्ध नगर, वडगांव शेरी, पुणे. ४११०१४. महाराष्ट्र.
संपर्क क्र. : ०२० - ६६११७९०४/०६/२१/०२/०३/०८ फैक्स : ०२० - ६६११७९३४
मो. ७३८५३३५७५६/ ९९७०५६१२३४/ ९८६०९६४३२३
ई मेल - drswamihardas@hotmail.com वेब - www.shls.info / www.siddhamandir.org

वैदिक संशोधन मंडल, पुणे (आदर्श संस्कृत शोध संस्थान) के सौजन्य से